शान्ति सुमन के गीत-संग्रहों से

कुछ चुने हुए गीत

चयन : श्रेयसी वर्मा

रोएँदार कुहासे

रोएँदार कुहासे -
आँखें झँपी-झँपी,
सोनरायी पातों पर ठहरी भोर

प्राणों से उलझे प्राण
झीलों भर हँसे गुलाब
उजले-काले हुए अँधेरे
भागे आहट दाब

नमी बेतहासे -
खुशबू कँपी-कँपी
कबूतर के पंखों पर ठहरी भोर

औंधे कजरौटे सा आसमान
फटे आँचल सी नदी
पथराए बरगद के नैन
ठहरी सी कोई सदी

मौसम ने फेंके पासे
मछली छपी-छपी
बरफों के फूलों पर ठहरी भोर

ठण्डे लोहे सा एकान्त
कनेरों सी टुसियायी रात
सूरज ने छिड़के अबीर
दुहरे हैं कुहरी के गात

महकी हैं साँसें
सुधियाँ तपी-तपी
अलसायी पलकों पर ठहरी भोर

●

पत्थरों का शहर

यह शहर पत्थरों का पत्थरों का शहर
टूटी हुई सुबह यहाँ
झुकी हुई शाम
जेलों से दफ्तर के
शापित आराम
गाँठों सी गलियों में भरी-भरी बदबू
साफ हवा की जगह पिएँ सभी जहर
पत्थरों का शहर
घुटते संबंधों की
चर्चा बदनाम
धुएँ के छल्लों सा
जीना नाकाम
मकड़ी के जालों सी बिछी हुई उलझनें
सतही शर्त्तों से सब दबे हुए पहर
पत्थरों का शहर
गोली में नींद यहाँ
बिके खुले आम
साँसों के कर्ज लिखे
इच्छा के नाम
ताजा खबरों को जीते हैं यहाँ लोग
डूबती निगाहों में नुमाइशी लहर
पत्थरों का शहर
सिर्फ औपचारिक हैं
परिचय - प्रणाम
चाय पिला जोड़े सब
चीनी के दाम
अंधी दीवारों से टकरा निरुपाय
लँगड़े सुधारों के कँफसते कहर
पत्थरों का शहर ●

जाल फेंकता रहा

फँसी नहीं मछली
जाल फेंकता रहा मछेरा
नीम-छनी चाँदनी
खड़ी राह रोके,
समय का पहरुआ -
बार-बार टोके,
बूँदे फिर उछलीं -
एक ओर गहरा अंधेरा
जाल फेंकता रहा मछेरा

गंधों के मोहपाश,
दरवाजे खड़े रहे,
लाखों त्योहार-पर्व -
सपनों में पड़े रहे,
साधें यों बिछलीं -
तिर आया नैन में सबेरा
जाल फेंकता रहा मछेरा

डगमग सी घटनइया,
खाँचे हैं खाली,
सुधि में समाई है -
पीड़ा घरवाली,
कह दे जो ओ छली !
उलट जाय बीच नदी बेड़ा
जाल फेंकता रहा मछेरा

●

क्रोशिया काढ़े दिन

क्रोशिया काढ़े दिन बीते –
अब तो चूल्हे–चौके की बात

धूओं से भर जाती घर की छत सुबह–सुबह,
किलक और ठुनक दे मन की सब बातें कह,
कोहबर के पुष्प–रेणु रीते–
अब तो बस सब मौके की बात।

बेटी सयानी से बूढ़ी सी सास तक,
चर्चा सरनाम हुई नैहर की आस तक,
मूल्यहीन मूल्य सभी जीते –
आमद–खर्चों में धोखे की बात।

अब तेरे नाम नहीं शाम का हरेक दर्द,
डायरी लिखती है गीतों के साथ कर्ज,
अब होते नहीं जीने के कई सुभीते –
पानी पर उठते फोके की बात

●

नागकेसर हवा

मुट्ठियों में बन्द कर ली
नागकेसर हवा

एक तिनका धूप लिखती
है भला-सा नाम
देखना फिर अतिथि
आयेगा तुम्हारे गाम
सर्दियों में नरम हाथों
से धरा कहवा

गेहुँओं की पत्तियों पर
छपा सारा हाल
फुनगियों पर दूब की
मौसम चढ़ा इस साल
रंग हरे हो गये पीले
बात में मितवा

एक चिड़िया चोंच भर
लेकर उड़ी अनबन
भाभियों के खनकते
हाथों हिले कंगन
स्वागतम् गूंथी हथेली
धो गयी शिकवा

●

रोशनी घरों में

लौट रही रोशनी घरों में
जैसे कुछ खोया अधरों में

खामोशी में हिलते पर्दे
उड़ रहे किताबों से गर्दे
आ जाना गीत के स्वरों में

लगती सब परिभाषा झूठी
कच्चे पीतल की अंगूठी
सोने की ईंट बादरों में

दिन कोई भूला बनजारा
पेड़ों का ले रहा सहारा
होती हूँ बन्द अक्षरों में

●

परछाईं टूटती

परछाईं टूटती
हल्दी के अंगों से उबटन-सी छूटती

हवा-हवा एक हुई
गीतों की टेक हुई
दूर अंधेरे में कोई कोंपल फूटती

धूप-छन्द चट्टानें
इन्द्रधनुष सिरहाने
यादों की बिटिया अंगूठे को चूसती

नदी से, गलीचे से
पैरों के नीचे से
डूबते किनारों की बातें दो टूक-सी

जानें हम-तुम कैसे
घुले-मिले रंगों-से
शामों की सैर आसमानों की रुख्सती

●

खुद को टेरते

यह दिन भी बीत गया
लो, खुद को टेरते

धूप-हंसी छूट गई
किरन-डार टूट गई
फूल झरे तुलसी के चौरे
कनेर के

भेद आसमानों के
गीत ये पियानों के
हौसले मकानो के घिर गये
मुंडेर से

मुट्ठी भर पेड़ खड़े
डार-पात के नखरे
मुँह ढँक के पड़े हैं किनारे
गदबेर-से

●

मेघ तरु फूले

मेघ-तरु फूले
साथ थे, कुछ दूर चलकर रास्ता भूले

हवा के ये महल झोंके
बीन बजते घोंसलों के
बरुनियों के देवदारु तले पड़े झूले

कब कहां, ये छूट जायें
धान-बाली फूट जायें
आंख से देखे,
उठाकर हाथ से छूले

धूल-माटी के घरौंदे
आंधियों के पांव, पौदे
दस दिशा, दस हाथ, फिर भी लग रहे लूले

●

बादल लौट आ

दुख रही है अब नदी की देह
बादल लौट आ

छू लिये हैं पांव संझा के
सीपियों ने खोल अपने पंख
होंठ तक पहुंचे हुए अनुबन्ध के
सौंप डाले कई उजले शंख
हो गया है इन्तजार विदेह
बादल लौट आ

बह चली है बैजनी नदियां
खोलकर कत्थई हवा के पाल
लिखे गेरू से नयन के गीत
छपे कोंपल पर सुरभि के हाल
खेत के पतले हुए हैं रेह
बादल लौट आ

फूलते पीले पलासों में
कांपते हैं खुशबुओं के चाव
रुकी धारों में कई दिन से
हौसले से कागजों की नाव
उग रहा है मौसमी संदेह
बादल लौट आ

●

गंध लिखी देहरी

माँ की परछाईं-सी लगती
गोरी-दुबली शाम
पिता-सरीखे दिन के माथे
चूने लगता घाम

दरवाजे के सांकल -
छाप अंगुलियों की ठहरी
भुनी हुई सूजी की मीठी
गंध लिखी देहरी
याद बहुत आते हैं घर के
परिचय और प्रणाम

उजले-पीले कई-कई
संदर्भ सलोने-से
तुतली जिद पर गुस्से लगते
कांच खिलौने के
नूपुर पहन बहन का हंसना
फिरना सारा गाम

कहीं-कहीं दुखती है
घर की छोटी आमदनी
धुआं पहनते चौके
बुनते केवल नागफनी
मिट्टी के प्याले-सी दरकी
उमर हुई गुमनाम

●

कोई बच्ची

जब कभी कोई बच्ची
वर्षा में नहाती है
घर की याद आती है

डाल पकड़ तोड़ना
गुच्छे कनेर के
होंठ दबी हंसी
पूछना घेर के
हर बार गंध नहायी हवा
इस जगह लाती है
घर की याद आती है

जैसे रख दी गई
रंगों के घर में
एक अबूझ प्यार
समा गया हो नजर में
होते ही सुबह सांसें
लाल ईंट-सी पकाती हैं
घर की याद आती है

इमामी की महक से
भरी हुई दुपहरी
भुनी हुई सूजी की
गंध लिखी देहरी
गेरू से रंगी आंखें
इस घाट पर लजाती हैं
घर की याद आती है

●

हम मुठभेड़ हुए

थाली उतनी की उतनी ही
छोटी हो गयी रोटी
कहती बूढ़ी दादी अपने गाँव की
सबसे बूढ़ी दादी अपने गाँव की

फेन-फूल-से उठे, मगर राखों के ढेर हुए
धँसे हुए आँखों के किस्से, हम मुठभेड़ हुए
भूख हुई अजगर-सी, सूखी
तन की बोटी-बोटी
कहती बड़की काकी अपने गाँव की
सबसे सुन्दर काकी अपने गाँव की

अपना तो घर गिरा, दरोगा के घर नये उठे
हाथ और मुँह के रिश्ते में ऐसे रहे जुटे
सिर से पाँवों की दूरी अब
दिन-दिन होती छोटी
कहती नवकी भौजी अपने गाँव की
सबसे गोरी भौजी अपने गाँव की

करना होगा खत्म कर्ज, यह सूद उगाही, लहना
लापरवाह व्यवस्था के खूँटे में बँधकर रहना
नाम भूख का रोटी पर
जीतेगी अपनी गोटी
कहती रानी बहना अपने गाँव की
सबसे छोटी बहना अपने गाँव की

●

बेटा माँगे चन्द्रमा

फटी हुई गंजी ना पहने
खाये बासी भात ना
बेटा मेरा रोये, माँगे
एक पूरा चन्द्रमा

पाटी पर वह सीख रहा
लिखना ओ-ना-मा-सी
अ से अपना, आ से आमद
धरती सारी माँ-सी
बाप को हल में जुता देखकर
सीखे होश सम्हालना

घट्ठे पड़े हुए हाथों का
प्यार बड़ा ही सच्चा
खोज रहा अपनी बस्ती में
दूध नहाया बच्चा
बाप सरीखा उसको आता
नहीं भूख को टालना

अभी समय को खेतों में
पौधों-सा रोप रहा
आँखों में उठने वाले
गुस्से को सोच रहा
रक्तहीन हुआ जाता
कैसे गोदी का पालना

●

रानी का गीत

रानी के पास हैं बहुत धन
हाथी-घोड़े
कौन है जो रानी के रथ को
पीछे मोड़े

रानी न खेत जाये
करे न सिंचाई
रानी की थाल में है
खीर औ' मलाई
आग जो लगाये उनके
हाथ गोरे-गोरे
कौन है जो रानी के रथ को
पीछे मोड़े

खटे न कभी मिल में
करे न कताई
रानी की देह पे है
रेशमी रजाई
पीठ के निशान भी न गिने
उनके कोड़े
कौन है जो रानी के रथ को
पीछे मोड़े

रानी के पाँव लगे
नहीं धूल-छाई
रानी की भेंट चढ़ी
हमारी कमाई
चान औ' सुरुज हाथ उन्हें
सभी जोड़े

कौन है जो रानी के रथ को
पीछे मोड़े

कौन कहे समय की भी
होती है सिलाई
काटता है वही जो
करता बोआई
कभी छोटी चिड़िया भी बाज
को मरोड़े
कौन है जो रानी के रथ को
पीछे मोड़े

●

लाल कवच पहने

जिन हाथों ने हल जोते
जिन हाथों ने वस्त्र बुने
धन्यवाद उन हाथों -
के ही हैं सारे सपने

खान-खदानों में जो निश-दिन
जलती रहती आग
कल-कारखाने में जो खेले
इस्पातों से फाग
लहूलुहान समय को जिसने
रूप-रंग दिये अपने

पिघलाकर अँधियारे को जो
सुबहें सुर्ख निकाल
चिनगारी बोते हैं उनकी
खातिर जो कंगाल
अपनी ताकत तोली जिसने
मिहनत लगी चमकने

झोपड़ियों की आँखें खोले
ये उमड़े जन-ज्वार
आनेवाले कल की हँसी -
खुशी के पहरेदार
जुल्मों को नकारकर जिसने
लाल कवच पहने

●

भूखों नहीं मरेंगे लोग

बन्दोबस्त हुआ अच्छा अब
भूखों नहीं मरेंगे लोग
अपने ही सपनों को खाकर
अपना पेट भरेंगे लोग

घर के सर्द हुए चूल्हे तो
इससे क्या बदहाल हुए
राजकुँवर की अगवानी में
कितने मालामाल हुए
पानी की कीमत पूछेंगे
प्यासे नहीं रहेंगे लोग
पूँछ उठाये मछली जैसे
खुद से जिक्र करेंगे लोग

इससे क्या आगों की धमकी
मिली आज झोपड़ियों को
बात-बात में करें उतारा
हम आँखों में परियों को
कागज के दस्तावेजों से अब
अपनी उमर गढ़ेंगे लोग
पत्थर पर भी खुदी रोटियों
की खातिर ललचेंगे लोग

कच्चे घर से वर्षा में भी
तने हुए जो हाथ यहाँ
खुशियों की खातिर वे कब से
जूझ रहे हैं यहाँ-वहाँ
बेजुबान इस बस्ती को
अब पूरा मुखर करेंगे लोग
खुशियों को कालेपानी से
वापस वही करेंगे लोग ●

बाँटो तुम चिनगी

सड़कों पर बनते जुलूस, देखूँ जब मेरे बेटे
लगता एक गलत आजादी, तेरे हाथ लगी
मिहनत तेरी नये सिरे से
इस मिट्टी को बुनती
धरती के रेशे-रेशे को
ताकत देकर रचती
अगहन हो या पूस, हाथ कटते जब तेरे बेटे
काली आँधी में फौलादी, आग नयी सुलगी

पूरा एक वसंत उठी
बाँहों में खिलता है
कई भूमिगत आगों में संकल्प
निखर चलता है
बने बहुत फानूस, होश में आओ मेरे बेटे
देखो सिर पर लिए मुनादी, पेड़ों की फुनगी

रोप समय को पौधे-सा तुम
इन्तजार हो करते
स्याह व्यवस्था को अपने
मासूम खून से रंगते
दहके लाल बुरूश, दहकते तुम भी मेरे बेटे
हवा घूमती बन शहजादी, बाँटो तुम चिनगी

●

तने हुए कच्चे घर से

तेरे बाबू लाते थे कर्जे में गेहूँ के दाने
तेरी ही खातिर आती थीं घर में कुछ खुशियाँ बेटे

तेरी माँ धरती-सी सपना
बुनती खुशहाली का
बोझ उठाती है छाती पर
दुखती बदहाली का
अँतड़ी की ऐंठन में खोजें हम इस जीवन के माने
जब भी चमका करे तुम्हारे हाथों में हँसिया बेटे

भीग-भीग कर वर्षा में कुछ
तने हुए कच्चे घर से
तुमको बढ़ते देखा मैंने
उस अनथके असर से
अपनी हालत बदलेगी, बदलेंगे मौसम के गाने
मिहनत के बहे पसीने ही बनते हैं अब मसियाँ बेटे

अपने घर में आज तलक जो
बना रहे थे तहखाने
उनसे ही खुलने को हैं उनके
जुल्मों के अफसाने
झोपड़ियों की आँखें लेंगी लील कचहरी-थाने
इतिहासों की कथा बदल देंगी तेरी हँसियाँ बेटे

●

हल-सी जिन्दगी

आ गये
काली आँधियों के दायरे में हम
खेत में जलती फसल-सी जिन्दगी

फसल जैसे आइना हो
निरखते थे रूप
बांह में हरियालियां पहने
पकड़ते थे धूप
फूल की खुशबू कहाँ कुम्हला गयी
रेत में धँसते कमल-सी जिन्दगी

दहशतों की नींद सोयी
हर गली, हर मोड़
देर कुछ जीकर मरा है
रोशनी का मोर
छू गया हो पाँव जैसे आग से
धुंआ, कुहरा, रेत-छल-सी जिन्दगी

वे भी दिन थे रंग पढ़कर
बताते थे नाम
अब हमारे हाथ को कंधे
नहीं हर शाम
भूत जैसे पेड़, पोखर, बस्तियाँ
बैल बिन बेकार हल-सी जिन्दगी

●

फूल की लाल पंखुड़ियाँ

बिंधी फूल की लाल पंखुड़ियाँ
कांट के वन में

भूख लिए रोटी के सपने
झुकी हुई पेटों पर अपने
पाँखें खुजलाती हैं चिड़ियाँ
कांट के वन में

जहाँ-तहाँ बबूल-वन फूले
उड़े धूल के बड़े बगूले
रेत हुई जलहीन मछलियाँ
कांट के वन में

खिला खेत में खून-पसीना
फलकी आस लिये यह जीना
तड़क रहीं कमजोर पसलियाँ
कांट के वन में

हाथों को मशीन-सा करके
बच्चों की हंसियों से भरके
सुबह उगी ज्यों लाल बिजलियाँ
कांट के वन में

●

दूध-फूल से बढ़ेंगे

आज तक नहीं छूटी
रेहन पर लगी जो
जमीन पिछुवारे की
बहिना की शादी में

मेड़ पर उगा वह पेड़ अमरूद का
खेत के साथ ही महाजन का हो गया
हिलते हैं पत्ते अब भी अपनी आँखों में
नारंगी था अभी मन सहजन-सा हो गया

गेहूँ जो होता तो
कूट-पीस खाते;
पर कुछ भी हुआ नहीं
घुन लगी आजादी में

बाबा से बाबू तक यही तो हुआ
उम्र से दोगुने कर्ज में डूबे हैं
अपना तो डीह भी जायेगा सूखे में
घर से भी बेदखल पूरे ये सूबे हैं

यह जालिम घुसखोरी
कब तक छिपा रहेगा
अपना लाल सूरज भी
इस मोटी खादी में

भूखों की जमात लूटने चली
खेतों, खलिहानों, खदानों की थाती
अब मेहनतकश हाथ नहीं काटेंगे
चमकते हँसिये के संग ये दरांती

दूध-फूल से बढ़ेंगे
बच्चे कच्चे
ओसारों पर किलकेंगे
इन बून्दाबान्दी में ●

हरापन ओढ़ती है

फिर हरापन ओढ़ती है
ताल में झरती कमल की पंखुरी

हवा बहते ही चमकती
ये भरी आँखें
डाल पर तैयार उड़ने को
रुकी पाँखें
उस शिवाले के कलश पर
मेघ फूँके बंसरी

उजाला सा फूटता पथ
दीखते वन के
पाँव में छाले लिये
पायल कई खनके
मोड़ पर भरती कुलाँचें
हिरनियाँ जो थीं डरी

अवतरण होगा बहेगी धार
गंगा की नई
गाँव की पगडंडियों में
राजपथ होंगे कई
छाप नंगे पाँव की
अब शहर में लगती बड़ी

●

दिन आये

दिन कैसे-कैसे आये
दिन आये

रंगों का पुड़िया उड़ा
हवा लाल हुई
बादल की देह यों लगी
गुलाल हुई
दुख के अँखुवे पल में मुरझाये
दिन आये

दूब ने कनखियों से
क्या देखा
खिंची हुई भाल पर
सगुन रेखा
गाँव के सीवान लाँघ आये
दिन आये

नदी-घाट
सूखते अंगोछे
धूपों ने लहर के
मुँह पोछे
कहा धीरे, लो जी! हम आये
दिन आये

हाथों से हाथों
की दूरी
भली रही यह भी
मजबूरी
साँस पर पहाड़ उठा लाये
दिन आये

●

गमला करोटन का

बहुत खुश हूँ
खुश बहुत हूँ
हाल अपना लिखो
क्या हुआ कल रात आयी
जोर की आँधी
नीबुओं की पत्तियाँ फिर
रात भर जागीं

समय कम है
कम समय है
हर मुहिम पर दिखो
एक गमला करोटन का
ले गया कोई
अँधेरे में पत्थरों को
बो गया कोई

तेज कर उड़ानों को
उड़ानों को तेज कर
धीरज रखो
अलग मत करना कभी
इस कठिन दिन को
छाँह में भी धूप के किस्से
कहो मन को

खेत में फसलों सी
फसलों सी खेत में
दिन-दिन पको

●

खुशबू के आखर

सहमे-सहमे पत्ते डोले
चिड़ियों की पाँखों को खोले
हवा उधर से बहती जाना
खुशबू के आखर लिख आना

नींदों में बतियाती पलकें
ओठों के संगम पर चलके
टुकड़े जोड़ रही दिन भर की
बातों में जी का दिख जाना

पूरे दिन की थकी हुई सी
मूंगों जैसी टँकी हुई सी
हँसियों का झरना बह जाना
अपना सुन्दर घर भर जाना

बहुत दिनों पर बेटी जैसी
घर आई हो खुशी भली सी
इस दिन को सौ जनम बनाना
सुख को साँसों में रख जाना

●

भीतर-भीतर आग

भीतर-भीतर आग बहुत है
बाहर तो सन्नाटा है

सड़कें सिकुड़ गयी हैं भय से
देख खून की छापें
दहशत में डूबे हैं पत्ते
अंधकार भी काँपे

किसने है यह आग लगायी
जंगल किसने काटा है

घर तक पहुँचानेवाले वे
धमकाते हैं राहों में
जाने कब सींघा बज जाये
तीर चुभेंगे बाँहों में

कहने को है तेज रोशनी
कालिख को ही बाँटा है

कभी धूप ने, कभी छाँव ने
छीनी है कोमलता
एक करोटनवाला गमला
रहा सदा ही जलता

खुशियों वाले दिन पर लगता
लगा किसी का चाँटा है

●

गाँव नहीं छोड़ा

दरवाजे का आम-आँवला
घर का तुलसी-चौरा
इसीलिये अम्मा ने अपना
गाँव नहीं छोड़ा

पेबन्दों को सिलते -
मन से उदास होती
भैया के आने की खूशबू -
भर से खुश होती
भाभी ने कितना समझाया
मान नहीं तोड़ा

कभी-कभी बजते घर में
घुंघरू से पोती-पोते
छोटे-छोटे बँटे बताशे
हाथों के सुख होते
घर की खातिर लुटा दिया सब
रखा न कुछ थोड़ा

गहना बनने वाले दिन में
खेत खरीद लिये
बाबूजी के कहे हुए सब
सपने संग लिये
सह न सकी जब खूँटे पर से
गया बैल जोड़ा
इसीलिए अम्मा ने अपना
गाँव नहीं छोड़ा

●

तुमको चाहा कितना

तुमको चाहा कितना-कितना मैंने अपनी चाह में
सूरजमुखी खेत में झूमे, फसलें खड़ी गवाह में

रुकता नहीं प्यार, प्यार यह
नदी, झील पर्वत-सा
मीठा-मीठा लगे रात-दिन
शहद-घुले शरबत-सा

लाज का गहना पहने तेरी
आँखें बसी निगाह में

इन हाथों से रची रोटियाँ
प्यारी पकवानों-सी
लहू उगाती क्षण-क्षण मुझ में
ममता वरदानों-सी

धूप-हवा-पानी इस घर के
घूमे भली सलाह में

अबके काट रहा जब मैं खुद
अपने हाथों फसलें
परस तुम्हारें हाथों का भी
कहता मिलकर हंस लें

पीला फूल कनेर एक खिलता
है तो दिन-माह में

बाजूबंद नहीं है तो क्या
मुक्त हवा तो है
देने को अपने हिस्से में
रक्तजवा तो है

साथ-साथ जीते-मरते हैं
रहते इसी उछाह में ●

धीरे पांव धरो

धीरे पांव धरो !
आज पिता-गृह धन्य हुआ है
मंत्र-सदृश उचरो !

तुम अम्मा के घर की देहरी
बाबूजी की शान
तुम भाभी के जूड़े का पिन
भैया की मुस्कान

पोर-पोर आंगन के
लाल महावर-सी निखरो !
धीरे पांव धरो !

तेरी हंसी पहनकर गाये
फूलों की टहनी
तुम अन्तर की भाषा में
सपनों के सूत बनी

आंचल भरकर दूब-धान
सिन्दूरी नमन करो !
धीरे पांव धरो !

जीवन की अल्पना रचेंगे
सुख के मीन-मयूर
लहठीवाले हाथ तुम्हारे
माथे का सिन्दूर

पितरों के गौरी-गणेश को
पूजो, वरन करो !
धीरे पांव धरो !

●

एक प्यार

मुझमें अपनापन बोता है
साँझ-सकारे यह मेरा घर

उगते ही सूरज के
रोशनदान बाँटते ढेर उजाले
धूपों के परदे में खिल-खिल
उठते हैं खिड़की के जाले
चिड़ियों का जैसे खोंता है
झिन-झिन बजता है कोई स्वर

एक हँसी आँगन से उठती
और फैल जाती तारों पर
मन की सारी बात लिखी हो
जैसे उजली दीवारों पर
एक प्यार सबकुछ होता है
जिससे डरते हैं सारे डर

दरवाजे पर साँकल माँ की
आशीषों से भरी उंगलियाँ
पिता कि जैसे बाग-फूटती
एक स्वप्न में सौ-सौ कलियाँ
जहाँ परायापन रोता है
लुक-छिप खुशी बाँटता मन भर

●

एक सूर्य रोटी पर

यह भी हुआ भला
कथरी ओढ़े तालमखाने
चुनती शकुन्तला

कन्धे तक डूबी
सुजनी की देह गड़े कांटे
कोड़े-से बरसे दिन
जमा करे किस-किस खाते
अँधियारी रतनार प्रतीक्षा
बुनती चन्द्रकला

मुड़े हुए नाखून
ईख-सी गाँठदार उँगली
टूटी बेंट जंग से लथपथ
खुरपी-सी पसली
बलुआही मिट्टी पहने
केसर का बाग जला

बीड़ी धुकती ऊँध रहीं
पथराई शीशम आँखें
लहठी-सना पसीना
मन में चुभतीं गर्म सलाखें
एक सूर्य रोटी पर औंधा
चाँद नून-सा गला

●

पेड़

इस तरह होते बड़े ये पेड़
नहीं केवल चुप खड़े ये पेड़

टहनियों में दुख रहीं
नोकें सवालों की
बज रही समवेत धुन
कलछी–कुदालों की
हो नहीं पाते हरे ये पेड़
जड़ों से बेहद कड़े ये पेड़

आज तक खाते रहे
जो दुधमुंहे हिस्से
चुभ रहे उनको उन्हीं के
दाँत के किस्से
खुद–ब–खुद उनसे लड़े ये पेड़
भर रहे खाली घड़े ये पेड़

उगी, हाँ अब उगी
किरनें रोटियोंवाली
साँझ दहशत में सनी
होगी नहीं काली

दीखते कितने बड़े ये पेड़
नहीं मरकर भी मरे ये पेड़

●

फिर पलाश - वन दहके

याद तुम्हारी जब भी आये
ऐसे आये
सन्नाटे में दबी चीख नंगी हो जाये

डोल रहा मन तेज हवा में
जैसे दूकानें टिन की
आँखों में आकाश टूटता
सड़कों पर स्याही दिन की
अपने ही घर के आगे गोली चल जाये
कटहल के पत्तों पर बैठी चिड़िया उड़ जाये

जरद किनारीदार पहनकर
साड़ी पूजा-घर में
जैसे कोई माँ असीसती
बेटा कैद शहर में
राइफलों के कुन्दों में ज्यों कुचला जाये
जैसे बागी देशभक्त कोई मर जाये

किसी तिलस्मी-कथा सरीखे
आसंगों में बहके
तब तो ऐसा लगा कि फिर
कोई पलाश-वन दहके

मगर भूख-रोटी में जैसे महायुद्ध घिर आये
ऊंघ रही आंखों पर गर्म सलाखें भिड़ जायें

●

गेरू की लाली

फूलों का मौसम होठों पर
ओसों का टीका माथे पर
खेतों की माटी में खूब
नहायी लगती हो

गालों पर गेरू की लाली
लाली में खुशबू की जाली
घर में झाँक गयी जैसे –
पुरवाई लगती हो

मन में गमक भरी अगहन की
छँटने लगी उदासी जन की
थोड़ी हुई उदास कि चीज
पराई लगती हो

लहकी दुनिया अहसासों में
बीत गये दिन की बातों में
रामकसम, पहले से अधिक
लजायी लगती हो

●

बूँद पसीने की

देह साँवली पहने चकमक बूँद पसीने की
परब-तिहारों पर भी
तन पर वही पुरानी साड़ी
जंगल-झरने, पेड़-पहाड़ों
पर लगती है भारी

आधी झुकती डालों वाली कली नगीने की
साँसों में भीगेंगी आँखें
टपके महुवे कच्चे
बाँहों पर ताबीज लपेटे
हँसी दबाये बच्चे

गोबर-माटी सने हाथ में भाषा जीने की
बिना बात जो कभी न हँसती
कभी नहीं रोती है
आग पेट की वह केवल
आँखों में बोती है
लम्बी-चौड़ी दुनिया की पहचान उसी ने की

●

शंख बजाकर

शंख बजाकर बरसे बादल
खेती लहरी है

अँकुरे रेह-रेह में बीहन
मन में खेत टँके
दुख कोई भी नहीं कि
पहले हँसुली-बाँक बिके
सुनती नहीं हवा कछेर की
सचमुच बहरी है

चाह रही सुख को मुट्ठी में
बंद करे गाये
दुख के साये दूर-दूर से
आकर नहीं डराये
पोखर के जल नहीं बनेगी
आशा दुहरी है

खेत बटाई के देते हैं
नहीं रात भर सोने
सपने में सपने आते हैं
घर-विवाह-गौने
पाँव रंगे हैं लाल रंग में
खुशियाँ ठहरी हैं

●

खेत के नाम

बोये हुए बीज खेत में
रचते हैं रंगोली
अँकुरायेंगे तब सखियों की
होगी हँसी-ठिठोली

अपनी इच्छा, अपने सुख-दुख
और सभी डर अपने
नाम खेत के लिखकर हमने
बचा लिये कुछ सपने
इस बचाव में अनसुनी हो गयी
उनकी कड़की बोली

माँ की रोटी, नमक बहन का
और हँसी घरवाली
हलकू ने तो देखा केवल
रात पूसवाली
घीसू, माधो बिरहा गाते
साथ चल रही टोली

दुख सहकर ही हमने दर्द
भुलाया है दुख का
बचा हुआ है आँखों में
अभियान गीत सुख का
बहुत दिनों के बाद हवाओं
ने आँखें खोलीं

●

रोटी पर नमक

जाने कैसे मेड़ टूटता
बहा खेत का पानी
अपनी ही तकदीर आज
लग रही परायी सी

रोटी पर हो नमक कभी
तो प्याज नहीं मिलता
बथुवा के सागों में पिछला
स्वाद नहीं मिलता

दाने मकई-मटर के जैसे
मुट्ठी से रिसते
मन की अभिलाषा लगती
कमजोर कलाई सी

जब से बाढ़ अकाल हुए
हैं बच्चे डरे हुए
आँखें उड़ती हैं पतंग सी
पहरे कड़े हुए

किस-किसकी कहते
जीती इच्छायें साँसत में
बरस रहे सावन के जल में
दियासलाई सी

श्रम की थकन मिटे कैसे
जब रोटी-दाल नहीं
पूरा घर देने की खातिर
खुशी निहाल नहीं

कैसे कटें पूस की रातें -
बिन कम्बल सहते
हँसी और नींद पसरी है
फटी रजाई सी ●

अकाल में बच्चे

सन्नाटे में सीटी बजती
बस कुछ और नहीं
इस अकाल में बच्चे रोते
मुँह में कौर नहीं

जड़ पत्थर से खड़े शहर के
दोनों ओर मकान
यहाँ घरों के नाम खुली है
आदमखोर दूकान
सोख रहे प्रतिफल साँसों को
हम तो और नहीं

कैसे हँसे-हँसाये कोई
सुलग रही हो आग
कन्धों पर सपनों के जूए
बजते आदिम राग
ठण्डे चूल्हे के हाथों को
करते गौर नहीं

सदी यहाँ तक फेंक गयी है
हमको दिखा बताशे
उनके हाथों ढोल कभी तो
बन जाते है तासे
आशीषों से हमें रचे जो
ऐसा दौर नहीं

●

आस्था का गीत

नहीं चाहिये आधी रोटी और न जूठा भात
यह खोटी तकदीर एक दिन खायेगी ही मात

हम गरीब मजदूर भले
हम किसान मजबूर भले
पर अपनी लाचारी का अब गीत न गायेंगे
ताकत नई बटोर क्रांति के बीज उगायेंगे

कच्चे गीतों से अच्छा है
नारा एक लिखो
बँधे हुए द्वीपों से बेहतर
धारा एक दिखो
लेकर श्रम का नाम चले
लाल मशालें थाम चले
हाथ-हाथ मिल रोशनियों का तीज मनायेंगे

टुकड़े-टुकड़े जुड़े मगर
पेबन्द नहीं होंगे
जो बादल गरजे भर
वह अनुबंध नहीं होंगे

खाई-खन्दक पाँव तले
कट जायेंगे क्यों न गले
तिलक पसीने का रचकर हम जोत जगायेंगे
अब बहसों को छोड़े साथी
सोच नयी बदलें
नए सूर्य के स्वागत में
फसलों-से हम झुक लें
जोर-जुल्म अब बहुत खले
आग हथेली पर रख ले
देखें सब दम-खम वैसा संगठन बनायेंगे

●

आँखों में आग

तुमने धरती पर हल से
अपना अधिकार लिखा
ओ रे फौलादी तुमने
अपना घर-बार लिखा

खेतों की मेड़ों का आज
दिखा तो सही दहकना
मिहनत से धरती पर गिरता
चंदन हुआ पसीना
उजले दिन की आहट ले
यह भी सौ बार लिखा

चिड़ियों के डैनों से
खुलते आये दिन उजले
फिर कोई जल-गीत लगे
नभ से उतरे हौले
बिछा हुआ कालीन फसल का ही
हर बार दिखा

अलमुनियम के तसलों में
पकते भातों सा उबले
खान-खदानों खलिहानों में
किरणें मिलीं गले
जंगल के भी पेड़ों को
अपना गुलजार दिखा

●

कोशी के कछेर की लड़की

पहली बार ट्रेन में बैठी
पहली बार शहर आई
कोशी के कछेर का अपना
घर आँखों में भर लाई

खोज रही है खपरैलों पर
पसर गई लौकी की लतरें
गिरने को दीवार मगर है
थाम रही छानों की सतरें
दूब-धान की जगह जानकी
आँचल में ही पियराई

पोखर पर चलते भाई के
कन्धों पर हाथों को डाले
कभी नहीं थकती थी चाहे
पड़ जाये पैरों में छाले
अब तो कल्याणी से आगे
जाने में भी शरमाई

उड़ते पत्तों के संग अब वह
उड़ा नहीं करती राहों में
काले धागे को लोगों से
छिपा रही अपनी बाँहों में
अब तो जान गयी है भोली
फूलों की भी परछाई

●

मुनिया के घर का सूरज

मुनिया के घर का सूरज भी
अब पढ़ने-लिखने लगा
मुनिया की माँ का माथा अब
आगे बढ़ दिखने लगा

गाय नहीं कहती अब
वह मुनिया को
लगी समझने फिर से
इस दुनिया को
अपना ही गाँव-घर उसे अब
अपना सा लगने लगा

अभी बहुत छोटा है
उसका भाई
जिसकी खातिर बचाकर रखी
बड़ी कमाई
मुनिया का मन अब हाथों की
रेखा को पढ़ने लगा

इक हाथ में चाँदनी
इक है काला
आनेवाला दिन खोलेगा
उसका ताला
खेत-पथार-जबार सभी पर
वह नारा लिखने लगा
अंधकार से लड़नेवाली
मुनिया का चाँद तमगा

●

बड़े लाल घर में

नहीं पास में बीड़ी थी
और नहीं घड़े में पानी
बैलों सा खटकर जब आया
बड़े लाल घर में
चार घरों में बरतन मलती
उसकी बड़ी बहू
सूख रहा पैसे की खातिर
उसका लाल लहू
बाताबाती में रह जाता
बड़े लाल घर में
खींच न पाता रिकशा जब
साँसों पर ढोता ठेला
जबतक जिनगी है तब तक
ऐसा ही होगा मेला
गोइठा-करसी सुलगाता है
बड़े लाल घर में
एक बिछाता एक ओढ़ता
दो टुकड़े धोती के
ओमा की दूकान तक जाता
हाथ पकड़ पोती के
दुख को ही दुख सौंप रहा है
बड़े लाल घर में
यादों में है जीवित अभी
जवानी की यादें
हाँक बैलगाड़ी की
रस्ते पर मन को साधे
सोते में जग-जग जाता है
बड़े लाल घर में

●

आटे सी पिसती माँ

तनी शिराओंवाले हाथों
बिखर गये कुछ फूल
किसी पुरानी पीड़ा को मन
करता नहीं कबूल

रूप बदलकर आते हैं
फिर से कितने ही घाव
आँखों के रेशों में फिर
होता है कहीं जमाव
धीरज कहीं चटखने लगते
गड़ते कहीं बबूल

जब से देखा है माँ को
आटे सी पिसती हुई
बहन कभी तितली सी थी
अब चुभोती हुई सुई
गाँव-वनों-शहरों में फाँके
अपना भाई धूल

लगे न कोई गंध-विंधा
आँगन में जलती आग
खून-सनी माटी गीली
के सीने पर हैं दाग
एक लपट बन हिला गये हैं
छल के चिकने शूल

सफर बड़ा यह लम्बा है
इतिहास बड़ा संगीन
भूमिहीनों को पट्टे पर –
है बंजर मिली जमीन
मूठ हथौड़े-हल की पकड़े
दिये समय को तूल ●

उदास आँखें

उनको नींद नहीं आती है
लम्बी रात गये
सोच रहे इससे निकलेंगे
रस्ते कई नये

फटी हुई माँ की साड़ी
घर की उदास आँखें
खाँस रहे बाबू के इन
हाथों पर रखी सलाखें
पीठ दिखाई दे भाई की
कई बोझ लिये

धँसकर खोज रहे मछली
हम धूसर पानी में
बंसी में फँसती मछली
यह सहज कहानी में
जेल हमारे लिये बनी है
कुदिन हाथ सिये

दीवारों के विरवों सी
मजदूरी जब रोती
रेलों की छत पर करते
हम सपनों की खेती
कभी असम, पंजाब कभी हम
हुए यही जिये

●

निम्न मध्यवर्ग का गीत

सारा घर-आँगन लिखबा लो
भाभी, यह दलान लिखबा लो
पर अपने हिस्से भैया का प्यार
नहीं दूँगा
घुटनों के बल चले यहाँ पर
खाये खील-बताशे
दीवाली में लपट लाँघते
खूब बजाये ताशे
यह माँ का कंगन बिकवा लो
भाभी, यह अनबन दिखवा लो
पर इस आँगन में बनने दीवार
नहीं दूँगा

सबके हो जायेंगे आधे
माँ का क्या होगा
कैसे आधी होंगी 'काली'
गहबर का क्या होगा
बाबूजी का धोतीवाला तार
नहीं दूँगा

यह अनार ले जाओ भाभी
मुनुवाँ को देना
अपने काका की आँखों का
पानी सा रहना
लालपरी का छोटा घर-संसार
नहीं दूँगा

●

उदास हँसी

कल बाजार बन्द था
टिन में आटे नहीं पड़े
भूखे सो जायेंगे बच्चे
बाबा नहीं फिरे
दिन के पन्नों पर धीरे स्याही हुई जमा
एक उदास हँसी हँसती रहती है माँ

दीदी की आँखों में पिछली
रितु के रंग भरे
छत पर भींग गये सब के सब
सूख रहे कपड़े
असमय दिन में बदली ऐसे गयी समा
एक उदास हँसी हँसती रहती है माँ

बिना रुके दफ्तर की
यह आवाजाही
धीरे-धीरे मन ही अब
हो गया सिपाही
मुमकिन है फिर लायेंगे गाढ़ी नींद कमा
एक उदास हँसी हँसती रहती है माँ

अलग शहर से अबके
काम विजयवाड़ा में
बचपन, हँसी, नींद ले घर से
दूर रहे जाड़ा में
हाथों की मेंहदी आँखों में आई सगुन थमा
एक उदास हँसी हँसती रहती है माँ

●

शिशु की पहली साँस

शिशु की पहली गर्म साँस
जैसी अगहन की धूप
आती है तो किलकारी जैसी लगती है

रंग-विरंगे पंख ढूँढ़ते
बादल ये उतर रहे
गीले खेतों में जाकर
ओसों को कुतर रहे

मँजराते हुए पलास
रंग बिखेरकर नींदें
जगती हैं तो फुलवारी जैसी लगती हैं

तपे हुए हाथों वाले
सपनों के छूने भर से
सधे पाँव आते है जीवन
लगते जगर-मगर से

ये हिलते उजले कास
भाषा पहन खामोशी
अपनी केसर की क्यारी जैसी लगती है

●

नदी चिनगी सी

खिलखिलाती बहुत हँसती
गाँव की लड़की

चुनती साग खेत में -
करती हुई हवा से बातें
जैसे बड़ी बात को
छोटी खबर बनाकर छापे
टोकती है कभी कातिक
में लगी कड़की

धानी खेतों में नचना
चिड़िया की आँखों का
मीठा एक बोल लगता है
सबको लाखों का
नदी दहक चिनगी सी
धीरे से सरकी

खत को पढ़ती हुई
नयी धूपों में बँटी हुई
सीढ़ियाँ हरियाली की
फिर से चढ़ती हुई
शोभा है, पूँजी है वह
अपने नये घर की

●

मेघ इन्द्रनील (मैथिली गीत)

बेटीक लेल एक गीत

बेटी तोर सपना मे एक इन्द्रधनुष
पैरे-पैर उतरय, गोरे गोर उतरय
तोहर नीन मे चिरैयक पाँखि उड़य
एक गीत के किरिन भोरे भोर उचरय
एक जंगल लाल बिरिछ सँ भरल
अरिपन काढ़ल चौमुख पोखर
रोटी सँ लुबधल डारि-डारि
पुरइन संग झलमल बड़-पीपर
तोहर फ्राकक जेब मे अनार भरल
करविलक लाल टहनी गमकय
हरियर धानक ओ काँच सीस
दूधक आखर पोरे पोर सगुनय
तोर तरहथ बहय अकासगंगा
रोसनीक नदी ने कहियो सूखय
तीसी-जौ-गहुमक खेत-खेत
दुनू चान-सुरुज एकटक देखय
बेटी तोर आंगुर सँ रचल कविता
आँखिक उदास पाँतर परसय
तोर देहक गंध पहिर देहरी
हरदम लागय जे तिहार बरसय
तोहर हँसी नहाएल हवा बहत
फर-फर उड़ियाएत रिबन लाल
देखितहि जरि जाएत दुखक बोन
नवका दिन भेटत कमल-ताल
बेटी तोर संघर्षक माँजल मन
सोनक कलसी झलमल झलकय
जेना बाढ़य मौसम, रौद, गाछ
ओहिना आँखिक आशा निखरय ●

लाल काका

खेतक आड़ि पर ठाढ़ भेल
उदास लागथि लालकाका
उजरल सोहाग सन लागय
बाढ़ि सँ धोअल-पोछल गाम
गील माटि पर खिंचल रेख
मोनक कमजोर प्रणाम
आँखि तेना ऊसर भ गेल
पेट सँ देखथि लालकाका
जंगली हवा सन दौड़ैत छल
बिछिया बन्हने सगुनी बेटी
होरीक मादल सन ठनकि पड़य
बेटाक बोल सपनक पेटी
ओ कथा कहाँदन दहा गेल
हाथ सँ बाजथि लालकाका
टूटल खटिया पर देह पड़य
तँ लागय तड़कि जैत पसली
पछिला सुदभरना पड़ल रहल
देहक खातिर बीकल हँसली
टीनक थारी हो जेना जेल
चुपचाप सोचथि लालकाका
एहि बेर जँ फेर गाम एता
किछु मांगय पंचसाला बाबू
अपन आँत कें लाख दबेता
उघड़त ओ हटि जाइत काबू
एक अगिनकुंड सन दहकि गेल
मुट्ठी बान्हथि लालकाका

●

नयी बात नहीं

शव किसी युवती का है
इसलिये भीड़ है
देखनेवालों की
उठानेवालों की नहीं
एक दूसरे का मामला बताकर
गाँव और रेल पुलिस का
टालमटोल
कोई नहीं बात नहीं
जहाँ वह मिली है
गटर में
वहाँ सैकड़ों किस्सों के
सैकड़ों मुँह
लिखी हैं जाने कितनी कहानियाँ
उसके सिरहाने-पैताने
उसकी आत्मा में
ईश्वर नहीं था
या उसकी आत्मा तक
नहीं गया ईश्वर
वह सिर्फ देह थी,
देह के साथ रही,
देह लेकर मर गई
मनुष्य होने की आदिम परिभाषा
पर भी
पत्थर रख गई

●

फसल की किताब

उसकी आँखों में
चूल्हे की धौंक,
भुनती मछलियों की गंध
उसके होंठ, उसकी साँस,
उसके लहू में
अगहनी फसल की
फुनगियों पर दौड़ती
हवा के नृत्य होते थे
सूर्य और धूप की बातें करता था
हल जोतकर आया
वर्षा के गाछ की तरह
हरियाया उसका 'आदमी'
आटा गूँथना छोड़
वह चली जाती थी
उसके पास
सुबह के मैदान में जैसे
हवा दौड़े
दौड़ने लगते थे उसके सपने
फसल की पूरी किताब
लगती थी वह
जिसको हवा में
धीरे-धीरे खुलते
देखता था अपने मुख पर
ओस लपेटे
वह

●